पंजीकरण'

प्रतिभागी और शोध पत्र प्रस्तुतकर्ता को सेमिनार पंजीकरण प्रक्रिया पूरी करनी होगी और 15 मार्च, 2026 को या उससे पूर्व अपनी प्रतिभागिता पुष्टि करने हेतु ऑनलाइन पेमेंट/ऑफलाइन पेमेंट मोड में नियत रजिस्ट्रेशन फीस जमा करनी होगी।

पंजीकरण शुल्क'

संकाय सदस्य / शिक्षाविद:	Rs. 1000/-
शोधार्थी:	Rs. 500/-
परास्नातक छात्र':	Rs. 200/-

भुगतान विवरण

बैंक का नाम: स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया
अकाउंट का नाम: अरुण कुमार सिंह
खाता संख्या: 31203127449
IFSC कोड: SBIN0000014

ARUN KUMAR SINGH
SCAN TO PAY

महत्वपूर्ण बिंदु

पंजीकरण शुल्क में सेमिनार किट, रिफ्रेशमेंट और सर्टिफिकेट शामिल हैं। बाहर से आने वाले प्रतिभागियों को अपने ठहरने की व्यवस्था खुद करनी होगी, क्योंकि रजिस्ट्रेशन फ़ीस में उक्त की व्यवस्था शामिल नहीं है।
ऑफलाइन पंजीकरण सेमिनार के प्रथम दिवस दिनांक 27 मार्च तक महाविद्यालय परिसर में भी किया जाएगा।

पंजीकरण लिंक
https://forms.gle/3jgLBzwCgLX8mJnj8

संयोजक

प्रो. अरुण कुमार सिंह, इतिहास विभाग,
डी. ए. वी. पीजी. कॉलेज, आज़मगढ़

सह-संयोजक

डॉ. सर्वेश कुमार, कृषि अर्थशास्त्र विभाग,
श्री दुर्गा जी पीजी. कॉलेज, चंडेश्वर, आज़मगढ़

संगोष्ठी निदेशक

प्रो. सौम्य सेनगुप्ता, इतिहास विभाग,
डी. ए. वी. पीजी. कॉलेज, आज़मगढ़

आयोजन सचिव

1. प्रो. अनिल कुमार श्रीवास्तव
2. प्रो. राकेश यादव
3. प्रो. शिल्पा त्रिपाठी
4. प्रो. प्रकाश चंद श्रीवास्तव
5. प्रो. दिनेश कुमार तिवारी
6. डॉ. पंकज सिंह
7. डॉ. धर्मेन्द्र प्रताप यादव
8. डॉ. अमित कुमार सिंह

कौन प्रतिभाग कर सकते हैं?

प्रतिभागी- संकाय सदस्य, शोधकर्ता, शोधार्थी, स्नातकोत्तर छात्र-छात्राएँ, नीति-निर्माता, गैर-सरकारी संगठन प्रतिनिधि, तकनीकी विशेषज्ञ तथा सामुदायिक प्रतिनिधि जो बुनकर अध्ययन, सामाजिक विज्ञान, अर्थशास्त्र, ग्रामीण विकास, वस्त्र एवं हस्तशिल्प, डिजिटल नवाचार और जनजातीय/स्थानीय विकास के क्षेत्रों में कार्यरत हैं । प्रतिभागियों को दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन — "पूर्वी उत्तर प्रदेश के बुनकर समुदाय पर GST सुधारों का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव" में शोधपत्र प्रस्तुत करने एवं सहभागिता हेतु आमंत्रित किया जाता है।

सारांश जमा करने की अंतिम तिथि
15 मार्च 2026

पूर्ण शोध पत्र जमा करने की अंतिम तिथि
20 मार्च, 2026

शोध पत्र जमा करने के लिए ई-मेल करें
davgstnationalseminar@gmail.com

संपर्क नंबर
8318225375, 9454637262

Indian Council of Social Science Research

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"पूर्वी उत्तर प्रदेश के बुनकर समुदाय पर जी. एस. टी. सुधारों का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव"

दिनांक: 27 मार्च - 28 मार्च 2026

सहयोग से

भारतीय सामाजिक'विज्ञान अनुसन्धान परिषद् (ICSSR) , शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

आयोजक:
इतिहास विभाग,
दयानंद एंग्लो-वैदिक पीजी. कॉलेज, आजमगढ़,
सम्बद्ध- महाराजा सुहेल देव विश्वविद्यालय, आजमगढ़

स्थान: सेमिनार हॉल, दयानंद एंग्लो-वैदिक पी. जी. कॉलेज, आजमगढ़

संरक्षक

प्रो. प्रेमचन्द्र यादव
प्राचार्य,
डी. ए. वी. पीजी. कॉलेज,
आज़मगढ़

आनंद प्रकाश श्रीवास्तव
मंत्री, प्रबंध समिति,
डी. ए. वी. पीजी. कॉलेज,
आज़मगढ़

महाविद्यालय परिचय

दयानंद एंग्लो-वैदिक पी. जी. कॉलेज, आजमगढ़ की स्थापना वर्ष 1957 में हुई थी। यह संस्थान पूर्वांचल क्षेत्र में उच्च शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र रहा है। प्रारंभ में इसकी सम्बद्धता वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर थी। वर्ष 2020 में महाविद्यालय ने एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का अनुभव किया, जब इसका संबद्धता महाराजा सुहेल देव विश्वविद्यालय, आज़मगढ़ से हो गयी। नई संबद्धता के साथ महाविद्यालय ने शैक्षिक गुणवत्ता में वृद्धि, शोध एवं नवाचार को प्रोत्साहन, तथा समाज की विविध शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु नई पहलें प्रारंभ की हैं। यह परिवर्तन संस्थान को अधिक स्वायत्तता, लचीलापन और 21वीं सदी की चुनौतियों के अनुरूप कार्य करने की क्षमता प्रदान करता है। डी. ए. वी. पीजी. कॉलेज, आज़मगढ़ कई दशकों तक आज़मगढ़ तथा आसपास के क्षेत्रों की शैक्षिक उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा। छह दशकों से अधिक की गौरवशाली परंपरा के साथ महाविद्यालय ने सदैव गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को प्राथमिकता दी है।

वर्तमान में महाविद्यालय अंतर्विषयी सहयोग, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सामाजिक नवाचार का केंद्र बनने की दिशा में अग्रसर है। यहाँ विद्यार्थियों को न केवल ज्ञान और कौशल प्रदान किया जाता हैं, बल्कि उनमें नैतिक नेतृत्व, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय मूल्यों के विकास की दृष्टि भी प्रदान की जाती है।

अंतरराष्ट्रीय सहयोग, छात्र विनिमय कार्यक्रमों तथा शोध साझेदारियों के नए अवसरों के माध्यम से डी. ए. वी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आज़मगढ़ उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान को और सुदृढ़ कर रहा है। संक्षेप में, महाराजा सुहेलदेव राज्य विश्वविद्यालय से संबद्धता महाविद्यालय के इतिहास में एक परिवर्तनकारी अध्याय है, जो शैक्षिक उत्कृष्टता, नवाचार और सामाजिक प्रतिबद्धता के प्रति इसकी अटूट निष्ठा को दर्शाता है।

संगोष्ठी के बारे में

दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन "पूर्वी उत्तर प्रदेश के बुनकर समुदाय पर जी. एस. टी. सुधारों का सामाजिक–आर्थिक प्रभाव का अध्ययन" का अभिप्राय पूर्वी उत्तर प्रदेश के प्रमुख बुनकरी केन्द्रों–जैसे वाराणसी, मऊ, आज़मगढ़ तथा गोरखपुर–में स्थित बुनकर समुदाय की सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक निरंतरता तथा आजीविका प्रणालियों पर वस्तु एवं सेवा कर (GST) सुधारों के बहुआयामी प्रभावों का सैद्धांतिक एवं अनुभवजन्य विश्लेषण प्रस्तुत करना है।

सम्मेलन का केंद्रीय आकर्षण यह रहेगा कि कर-नीति में हुए संरचनात्मक परिवर्तनों ने किस प्रकार पारंपरिक हस्तकरघा उत्पादन पद्धतियों, श्रम संगठन, पारिवारिक सहभागिता, बाजार एकीकरण तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को पुनर्संरचित किया है।

यह शैक्षिक मंच अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र एवं सांस्कृतिक अध्ययन के अंतर्विषयी दृष्टिकोणों के माध्यम से बुनकर समुदाय के समक्ष उभरती चुनौतियों, अनुकूलन रणनीतियों तथा संभावनाओं का समग्र मूल्यांकन करेगा। सम्मेलन का उद्देश्य शोध-आधारित निष्कर्षों और क्षेत्रीय अनुभवों के आधार पर ऐसी नीतिगत अनुशंसाएँ विकसित करना है, जो न केवल बुनकर समुदाय की आर्थिक सुदृढ़ता को प्रोत्साहित करें, बल्कि उनकी विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण एवं संवर्धन में भी सार्थक योगदान दें।

आजमगढ़: परिचय

तमसा के पावन तट पर अवस्थित आजमगढ़ मानो समय की शिला पर अंकित एक जीवित गाथा है—तप, त्याग, प्रतिभा और परंपरा की। यह वही तपोभूमि है जहाँ महातपस्वी दुर्वासा की तप से वायु भी अनुशासित हुई, जहाँ योगावतार दत्तात्रेय की ध्यानमग्न चेतना ने प्रकृति को दिव्यता का स्पर्श दिया, और जहाँ चंद्रमा ऋषि की साधना ने इस भूमि को चिरशांति और पावन आभा से आलोकित किया।

यह धरती केवल तप और प्रतिभा की ही नहीं, वीरता की भी जन्मभूमि रही है—यहाँ कुंवर सिंह जैसे महान स्वतंत्रता सेनानी की शौर्य गाथाएँ जनमानस में आज भी स्वाभिमान की अग्नि प्रज्वलित करती हैं। इसी माटी से उठी ज्ञान-पिपासा की वह ज्योति जिसने राहुल सांकृत्यान जैसे विश्वमानस के यात्री को जन्म दिया—जिनकी लेखनी में यात्राएँ भी बोलती हैं और इतिहास भी। यहीं अयोध्या सिंह उपाध्याय ने अपनी काव्यधारा से हिंदी साहित्य को ऐसी मधुरता दी, जो आज भी पाठकों के मन को आलोकित करती है।

यह नगर शिल्प और सौंदर्य का भी तीर्थ है। यहाँ का हुनर तो मुबारकपुर के उन करघों में बोलता है, जहाँ बुनकर अपनी उंगलियों से रेशम पर जादू करते हैं। मुबारकपुर के बुनकरों की उँगलियाँ रेशम के तंतुओं पर ऐसा राग छेड़ती हैं कि वस्त्र नहीं, स्वप्न बुने जाते हैं।। वो साड़ियाँ जब बनकर तैयार होती हैं, तो उनमें सिर्फ धागे नहीं, बल्कि एक बुनकर की पूरी मेहनत और उसका प्यार बुना होता है। और निज़ामाबाद की वो काली मिट्टी के बर्तन! भाई साहब, वैसी कारीगरी और वैसी चमक आपको दुनिया के किसी कोने में नहीं मिलेगी। यह हुनर हमें हमारे पुरखों से मिला है और आज 2026 के दौर में भी, यहाँ का कलाकार अपनी जड़ों को मज़बूती से पकड़े हुए है।

आज उसी गौरवगाथा को नवयुगीन प्रकाश देता महाराजा सुहेल देव विश्वविद्यालय ज्ञान की अखंड दीपशिखा बनकर युवा चेतना को आलोकित कर रहा है।

इस प्रकार आजमगढ़ केवल एक भू-भाग नहीं, वह अनुभूति है—जहाँ ऋषियों की साधना, वीरों का पराक्रम, साहित्यकारों की वाणी और कारीगरों की कला एक साथ मिलकर भारत की सांस्कृतिक आत्मा का सजीव महाकाव्य रचती है।

विभाग के बारे में

डी.ए.वी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय में इतिहास विभाग की स्थापना वर्ष 1957 में हुई थी। प्रारम्भ में यह मुख्य भवन में संचालित होता था, किन्तु बाद में मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास के अध्ययन हेतु महाविद्यालय में एक पृथक विभाग की स्थापना की गई। वर्तमान में विभागाध्यक्ष प्रो. सौम्य सेनगुप्ता हैं।

विभाग का उद्देश्य अतीत की गहन समझ विकसित करते हुए भावी विद्वानों एवं शिक्षकों का निर्माण करना है। यहाँ इतिहास के अध्ययन को केवल तथ्यात्मक विषय न मानकर एक जीवंत, गतिशील एवं समकालीन जीवन से जुड़ा अनुशासन माना जाता है। गहन कक्षा संवाद, नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ तथा व्यापक छात्र-शोध परियोजनाओं के माध्यम से विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों, आलोचनात्मक चिंतन क्षमता तथा जटिल ऐतिहासिक प्रश्नों के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण विकसित किया जाता है।

वर्तमान में विभाग स्नातक (B.A.), स्नातकोत्तर (M.A.) तथा पी-एच.डी. स्तर के पाठ्यक्रम संचालित करता है। विभाग में शोधार्थियों के लिए दुर्लभ पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं से समृद्ध पुस्तकालय उपलब्ध है, जो अनुसंधान कार्य को सुदृढ़ आधार प्रदान करता है। समकालीन ऐतिहासिक प्रवृत्तियों के अनुरूप विभाग ने अपने शोध-क्षेत्रों का विस्तार करते हुए पर्यावरणीय इतिहास, मौखिक इतिहास, नगरीय इतिहास, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का इतिहास तथा कूटनीतिक इतिहास जैसे विषयों को भी शामिल किया है।

इस प्रकार, मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग न केवल परम्परागत ऐतिहासिक अध्ययन को सुदृढ़ करता है, बल्कि नवीन शोध प्रवृत्तियों को अपनाते हुए विद्यार्थियों और शोधार्थियों को व्यापक, समकालीन एवं प्रासंगिक ऐतिहासिक दृष्टि प्रदान करता है।

सारांश और शोध पत्र आमंत्रित

सेमिनार के विषय और उप-विषय से जुड़े वास्तविक(मौलिक), प्लेजरिज्म-फ्री शोध पत्र, सारांश के साथ मंगाए गए हैं।

जमा करने हेतु दिशा - निर्देश

सारांश : अधिकतम 300 शब्द
पूरा पेपर : अधिकतम 4000 शब्द
सबमिशन ओरिजिनल/वास्तविक(मौलिक), अप्रकाशित होना चाहिए, और कहीं विचाराधीन नहीं होना चाहिए।
सारांश और पूर्ण शोध पत्र तय डेडलाइन पर या उससे पहले जमा करना होगा।

प्रारूपण निर्देश

फ़ाइल फ़ॉर्मेट: MS Word
फ़ॉन्ट: टाइम्स न्यू रोमन, 12 pt (English) / कृतिदेव 10, 14 pt (Hindi)
लाइन स्पेसिंग: डबल-स्पेस
पहले पेज में ये चीज़ें होनी चाहिए:

- पेपर का शीर्षक
- लेखक का नाम
- पद का नाम
- संस्थागत संबद्धता
- संपर्क विवरण
- ईमेल आईडी

समीक्षा और अधिसूचना

सभी सबमिशन ICSSR गाइडलाइंस के अनुसार पीयर रिव्यू प्रोसेस से गुज़रेंगे।
चुने गए शोध सारांश और पूर्ण शोध पत्र के लेखकों को 25 मार्च, 2026 तक सूचित किया जाएगा।

प्रकाशन का अवसर

रिव्यू कमिटी की सलाह के अनुसार, चुने हुए उच्च योग्यता युक्त शोध पत्र को ISBN के साथ एक एडिटेड वॉल्यूम में पब्लिश किया जाएगा।

व्यापक विषय और उप-विषय

जी. एस. टी. का परिचय एवं जी. एस. टी. सुधारों पर चर्चा

- GST और भारतीय संघवाद: राज्य–केंद्र संबंधों का पुनर्संरचना
- कर सुधार, नीति निर्माण एवं शासन में बुनकर समुदाय की भूमिका
- राजनीतिक प्रतिनिधित्व, नीति सहभागिता एवं लोकतांत्रिक सशक्तीकरण
- विकास, सामाजिक न्याय एवं समावेशन
- GST कानून और बुनकरों की कानूनी चुनौतियाँ
- श्रम कानून, सामाजिक सुरक्षा एवं हस्तकरघा क्षेत्र
- बौद्धिक संपदा अधिकार (GI Tag) एवं बुनकर उत्पादों का संरक्षण
- नीति सुधार, छूट प्रावधान एवं संरक्षण तंत्र
- हस्तकरघा अर्थव्यवस्था, अनौपचारिक क्षेत्र एवं अप्रत्यक्ष कर प्रणाली
- मूल्य श्रृंखला (Value Chain), उत्पादकता, प्रतिस्पर्धात्मकता एवं बाजार एकीकरण
- गरीबी, आजीविका असुरक्षा एवं कर नीति
- आजीविका विविधीकरण, आय स्थिरता एवं आर्थिक सशक्तीकरण
- GST अनुपालन, लेखा-प्रबंधन, रिटर्न फाइलिंग एवं सूक्ष्म/लघु उद्यमों की चुनौतियाँ
- इनपुट टैक्स क्रेडिट (ITC) एवं बुनकर इकाइयों की कार्यक्षमता
- हस्तकरघा विपणन, ब्रांडिंग एवं कर संरचना
- ई-कॉमर्स, डिजिटल व्यापार एवं बुनकर उत्पाद
- आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन (Supply Chain Management) एवं कर सुधार
- MSME नीति, उद्यमिता एवं बुनकर विकास
- स्थानीय से वैश्विक बाजार तक बुनकर उत्पादों की मूल्य-यात्रा
- समावेशी विकास एवं क्षेत्रीय आर्थिक संतुलन

पूर्वी उत्तर प्रदेश के बुनकर समुदाय की सामाजिक-आर्थिक स्थिति

- क्षेत्रीय विषमता, क्लस्टर विकास एवं बुनकरी भूगोल
- ग्रामीण-शहरी प्रवाह, बाजार सुलभता और GST
- सांस्कृतिक परिदृश्य, स्थानिक पहचान एवं हस्तकरघा
- परिवहन, लॉजिस्टिक्स और कर अनुपालन
- पूर्वी उत्तर प्रदेश में बुनकर समुदाय का स्थानिक वितरण एवं क्षेत्रीय असमानताएँ
- बुनकरी केंद्रों (क्लस्टर) का भौगोलिक स्वरूप और GST सुधार
- सांस्कृतिक परिदृश्य (Cultural Landscape) और हस्तकरघा अर्थव्यवस्था

पूर्वी उत्तर प्रदेश के बुनकर समुदाय पर जी. एस. टी. सुधारों का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव

- परिवहन, लॉजिस्टिक्स एवं E-Way Bill का क्षेत्रीय प्रभाव
- GST सुधार: वैज्ञानिक नवाचारों का सामाजिक प्रभाव
- सूत, धागा एवं कपड़े की गुणवत्ता पर कर संरचना का अप्रत्यक्ष प्रभाव
- लघु एवं कुटीर उद्योगों पर GST का आर्थिक एवं व्यावसायिक प्रभाव
- जलवायु परिवर्तन का बुनकर आजीविका पर प्रभाव
- प्राकृतिक रंग, रासायनिक डाई और पर्यावरणीय प्रभाव
- रसायनों के सुरक्षित उपयोग एवं स्वास्थ्य प्रभाव
- GST सुधारों का बुनकर महिलाओं की आय, श्रम सहभागिता एवं आर्थिक स्वायत्तता पर प्रभाव
- लोक नीति, प्रशासनिक क्षमता एवं क्रियान्वयन की प्रभावशीलता
- GST सुधारों का बुनकरों की आय, उत्पादन लागत, लाभ संरचना एवं रोजगार पर प्रभाव
- GST सुधारों के प्रभाव का सांख्यिकीय विश्लेषण
- हस्तकरघा क्षेत्र में महिला श्रम, अनौपचारिकता एवं सामाजिक सुरक्षा
- कर नीति, लैंगिक असमानता एवं आजीविका असुरक्षा
- महिला उद्यमिता, MSME नीति एवं वित्तीय समावेशन
- राज्य–केंद्र संबंध एवं महिला-केंद्रित कल्याणकारी योजनाएँ
- राजनीतिक प्रतिनिधित्व, नीति-निर्माण में महिलाओं की सहभागिता एवं नेतृत्व
- श्रम कानून, मातृत्व लाभ एवं सामाजिक सुरक्षा तंत्र
- बौद्धिक संपदा अधिकार (GI Tag) एवं महिला कारीगरों की पहचान
- डिजिटल सशक्तिकरण, ई-कॉमर्स एवं महिला बुनकरों का बाजार एकीकरण
- समावेशी विकास, लैंगिक न्याय एवं सतत आर्थिक सशक्तीकरण

पूर्वी उत्तर प्रदेश के बुनकर समुदाय के सामाजिक-आर्थिक विकास हेतु नीतिगत दृष्टि की आवश्यकता

- पारंपरिक बुनकरी ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का समन्वय
- हस्तकरघा, विज्ञान एवं सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था
- प्रौद्योगिकी, डिजिटल कर प्रणाली और सामाजिक असमानता
- पर्यावरणीय विज्ञान, सतत बुनकरी और समाज
- स्वास्थ्य विज्ञान, कार्य-परिस्थितियाँ और बुनकर समुदाय
- डेटा विज्ञान, साक्ष्य-आधारित नीति और सामाजिक परिवर्तन
- विज्ञान, राज्य नीति और सामुदायिक सशक्तिकरण
- वस्त्र विज्ञान, पदार्थ विज्ञान और हस्तकरघा नवाचार
- रसायन विज्ञान: रंग, फाइबर एवं पर्यावरण-अनुकूल तकनीक
- करघा अभियांत्रिकी, एर्गोनॉमिक्स और उत्पादकता
- पर्यावरण विज्ञान एवं सतत हस्तकरघा उत्पादन
- कंप्यूटर विज्ञान, डिजिटल GST प्रणाली और अनुपालन
- डेटा विज्ञान, GIS और बुनकरी क्लस्टर विश्लेषण
- स्वास्थ्य विज्ञान: पेशागत रोग और वैज्ञानिक समाधान
- तकनीकी नवाचार, डिज़ाइन एवं उत्पाद विविधीकरण
- बुनकरी में प्रयुक्त प्राकृतिक एवं कृत्रिम रेशों का वैज्ञानिक अध्ययन
- पारंपरिक बनारसी बुनाई तकनीक बनाम आधुनिक वस्त्र प्रौद्योगिकी
- वस्त्र टिकाऊपन, मजबूती एवं गुणवत्ता नियंत्रण
- वैज्ञानिक नवाचार और हस्तकरघा उत्पाद विकास
- GST और रंग-रसायन (Dye & Chemical Inputs) की लागत संरचना
- पारंपरिक बनाम औद्योगिक रसायन प्रक्रियाएँ
- हरित रसायन (Green Chemistry) और हस्तकरघा क्षेत्र
- हस्तकरघा उद्योग का पर्यावरणीय पदचिह्न (Environmental Footprint)
- जल, ऊर्जा और संसाधन उपयोग का वैज्ञानिक विश्लेषण
- सतत बुनकरी (Sustainable Weaving Practices)
- GST सुधार और पर्यावरण-अनुकूल उत्पादन
- करघे की यांत्रिकी (Mechanics of Loom)
- तनाव, बल और गति का बुनाई प्रक्रिया में उपयोग
- प्रकाश, रंग और वस्त्र दृश्यता (Optics & Color Perception)
- पारंपरिक करघा बनाम अर्ध-यांत्रिक करघा: भौतिक तुलनात्मक अध्ययन
- करघा डिज़ाइन, एर्गोनॉमिक्स और श्रम दक्षता
- लो-कॉस्ट टेक्नोलॉजी और बुनकर उत्पादकता
- नवाचार, डिज़ाइन थिंकिंग और हस्तकरघा
- टेक्नोलॉजी अपनाने में GST की भूमिका
- GST डिजिटल प्लेटफॉर्म और तकनीकी साक्षरता
- बुनकर समुदाय में डिजिटल डिवाइड का वैज्ञानिक विश्लेषण
- ई-गवर्नेंस, डेटा सिस्टम और कर अनुपालन
- मोबाइल एप्स, सॉफ्टवेयर और हस्तकरघा विपणन
- बुनकर आय, उत्पादन और लागत डेटा का मॉडलिंग
- GIS, Spatial Data और बुनकरी क्लस्टर अध्ययन
- साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण में डेटा विज्ञान

राष्ट्रीय सलाहकार समिति

- प्रो. संजीव कुमार, कुलपति- महाराजा सुहेल देव विश्वविद्यालय, आजमगढ़
- प्रो. संजीत कुमार गुप्ता, कुलपति, जननायक चंद्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया, उत्तर प्रदेश
- प्रो. एच. पी. सिंह, कृषि विज्ञान संस्थान, बी. एच. यू. वाराणसी
- प्रो. अफसर अली, प्राचार्य, शिबली नेशनल कॉलेज, आजमगढ़
- श्री सलमान अबरार, व्यापारी, मऊ
- प्रो. अजय कुमार सिंह, के. एस. साकेत. पीजी कॉलेज, अयोध्या
- डॉ सत्यपाल सिंह, दीन दयाल उपाध्याय विश्विद्यालय, गोरखपुर
- श्री अजय कुमार शाही, अपर जिला जज, आजमगढ़
- डॉ. दुर्गा प्रसाद अस्थाना, पूर्व विभागाद्यक्ष भूगोल विभाग, डी. ए. वी. पीजी कॉलेज, आजमगढ़
- प्रो. गीता सिंह, डी. ए. वी. पीजी कॉलेज, आजमगढ़
- डॉ. दिनेश कुमार सिंह, जी. एस. एस. पीजी. कॉलेज, कोयलसा, आज़मगढ़
- श्री अनिल कुमार तिवारी, राजकीय महिला महाविद्यालय, अहिरौला, आजमगढ़

आयोजन समिति

- प्रो. जगदंबा प्रसाद दुबे
- प्रो. सुजीत कुमार श्रीवास्तव
- प्रो. विजय कुमार
- डॉ.अजय कुमार सोनकर
- डॉ. राजेश कुमार
- श्री विपिन चंद्र अस्थाना
- श्री. अवनीश राय
- श्री. जितेन्द्र
- डॉ. चंदन कुमार गौतम
- डॉ. रजनीश भारती
- डॉ. करुणेश सिंह
- श्री नवनीत तिवारी
- डॉ. सुरेंद्र कुमार यादव
- कुमारी संजू यादव
- श्री. शैलेन्द्र कुमार यादव
- श्री. दुर्गेश सिंह
- श्री कृष्णानंद पाण्डेय
- डॉ. संजय कुमार गौड़
- श्री. संदीप कुमार चौधरी
- श्री. यशवंत प्रताप
- श्री. अभिषेक यादव
- श्री सुधांशु श्रीवास्तव
- श्री रानू सिंह
- श्रीमती संध्या
- श्री मोहम्मद सिरताज़
- डॉ. नूरुल अज़ीज़ खान
- डॉ.सुभाष कुमार
- डॉ.शैलेन्द्र कुमार भारती
- डॉ. संतोष कुमार सिंह
- श्री गौरव कुमार सिंह
- डॉ. नीतू राय
- श्रीमती प्रीति सिंह
- डॉ. सौरभ सिंह
- डॉ. शिवेन्द्र कुमार सिंह
- डॉ. धीरज यादव
- डॉ. अभय सिंह
- डॉ. सिद्धार्थ सिंह
- श्री सुमित उपाध्याय
- डॉ. अलोक तिवारी
- डॉ. गणेश शंकर पाण्डेय
- डॉ. शिखा सिंह
- डॉ. धर्मेन्द्र कुमार
- डॉ. राजेश्वरी पाण्डेय
- डॉ. सुमन यादव
- डॉ. रविन्द्र कुमार साहनी
- डॉ. विवेक कुमार यादव